हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श

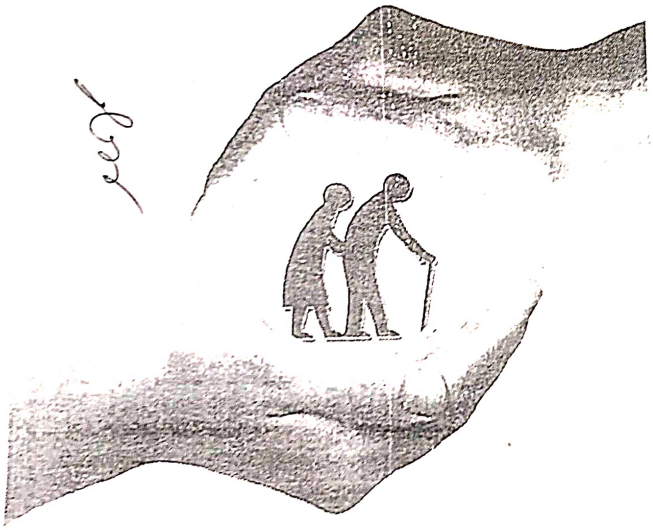

संपादक : डॉ. दिलीप मेहरा

ISBN - 978-81-950501-8-5

पुस्तक : हिन्दी कथा-साहित्य में वृद्ध विमर्श
संपादक : © डॉ. दिलीप मेहरा
प्रकाशक : उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
A-685 आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर -208 021 (उ.प्र.)
Email : utkarshpublisherskanpur@gmail.com
Mob. : 8707662869, 9554837752
संस्करण : प्रथम, 2021
मूल्य : 1195/-
आवरण सज्जा : तबारक अली, पटकापुर, कानपुर
शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : सार्थक डिजिटिल, कानपुर

Hindi Katha Sahitya Mein Vriddha Vimarsh
by : Dr. Dilip Mehra
Price : One thousand One hundred ninty five only.

14. अमरकांत के उपन्यास : वृद्ध मानसिकता के संदर्भ में
डॉ. धर्मेंद्र सिंह ठाकोर 133
15. अलका सरावगी के उपन्यासों में बूढ़े-बुजुर्गों का एकाकीपन
डॉ. सत्यवती चौबे 139
16. डॉ. सूरज सिंह नेगी के उपन्यास साहित्य में वृद्ध विमर्श
नीलम वाघवानी 146
17. वृद्धावस्था और अग्निपंखी
सोलंकी केतनकुमार. वी 152
18. वैश्वीकरण एवं बाजारवादी संस्कृति के बीच पिसते वृद्ध
('दौड़' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)
डॉ. दिलीप मेहरा 159
19. वृद्धों और वृद्ध होते लोगों के जीवन का गान : समय सरगम
डॉ. नवीन नंदवाना 163
20. वृद्धावस्था का यथार्थ निरूपण : अंतिम अरण्य
डॉ. भानुबहन ए. वसावा 174
21. वृद्धावस्था की विवशता : रेहन पर रग्घू
डॉ. अनिला मिश्रा 184
22. वृद्ध जीवन की पीड़ा का यथार्थ दस्तावेज : 'गिलिगडु'
डॉ. एन. टी. गामीत 191
23. संध्या छाया : वृद्ध जीवन के यथार्थ अनुभूति की अभिव्यक्ति
डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट 201
24. चार वृद्ध दरवेशों की दु:खद कथा : चार दरवेश
दीपिका नारणभाई वाघेला 213
25. वृद्ध विमर्श और 'चार दरवेश'
अनुराधा चौहान 217
26. 'सफेद पर्दे पर' उपन्यास में वृद्ध विमर्श
सुमेरदान 221
27. स्त्री वृद्धत्व की पीड़ा का जीवन्त दस्तावेज : दाई
डॉ. पार्वती गोसाई 225

कहानी साहित्य

28. अगले जनम मोहे वृद्ध न कीजो...
(वृद्धावस्था की कहानियों के विशेष संदर्भ में)
डॉ. पार्वती गोसाई 233

19

वृद्धों और वृद्ध होते लोगों के जीवन का गान : समय सरगम

डॉ. नवीन नंदवाना

"समय सरगम।
समय एक राग।
नहीं समय में निबद्ध हैं अनेक राग।
अनेक 'बंदिशें'।"

हर बंदिश में अपनी स्वर–लहरी। देह को झंकृत करती हुई। आत्मा में रच–बस जाती। दोनों की निकटता और दूरी एक–दूसरे में घुली–मिली। अंतर में उदित होता है एक आलोक पुंज। लय–ताल का सुर–सिंगार। राग–अनुराग और विराग, नेह–प्यार और दुलार। समय बहाने–बहाने सम्मोहित करता है। उदास करता है। अंदर का पाखी उड़ान के लिए फड़फड़ाता है। सिर्फ उदासी नहीं, इसी के साथ टँका जीवितों के लिए गहरा आदर–भाव। जन्मे तो, जीए तो।"

समय की सरगम के साथ तालमेल संसार के प्रत्येक व्यक्ति की पहली जरूरत होती है। इस संसार में सभी को समय की स्थितियों के साथ तालमेल बिठाकर जीवन जीना होता है। कृष्णा सोबती का उपन्यास 'समय सरगम' भी विभिन्न स्थितियों व पात्रों के सहारे जीवन की इन्हीं स्थितियों का यथार्थ अंकन करता है।

हिंदी की प्रख्यात रचनाकार कृष्णा सोबती का जन्म सन् 1925 में गुजरात पाकिस्तान में हुआ। विभाजन के बाद यह हिस्सा पाकिस्तान में चले जाने से सोबती जी भारत में दिल्ली आकर बसीं और अपनी कलम के जादू से साहित्य जगत में विशेष ख्याति अर्जित की। सूरजमुखी अँधेरे के (1972), ज़िन्दगीनामा (1979), दिलोदानिश (1993), समय सरगम (2000) और गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान (2017) उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। वहीं आपने बादलों के घेरे (1980) शीर्षक से कहानी संग्रह की रचना की। लंबी कहानी (आख्यायिका/उपन्यासिका) के रूप में आपने डार से बिछुड़ी (1958), मित्रो मरजानी (1967), यारों के यार (1968), तीन पहाड़ (1968), ऐ लड़की (1991)